PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume-6 | Issue-11 | November-2017 | ISSN - 2250-1991 | IF : 5.761 | IC Value : 79.96

ORIGINAL RESEARCH PAPER | Education

विद्यार्थियों में समायोजन की समस्याए एंवम समाधान

KEY WORDS:

किरण वर्मा शोधार्थी जैनविश्वभारती संस्थान लाडनूं–341306 राजस्थान

शिक्षा अनुभवों की निरन्तर पुनर्रचना के द्वारा जीने की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति की उन सभी शक्तियों का विकास है जो उसे अपने पर्यावरण को नियंत्रित करने और उसकी संभावनाओं को पूर्ण करने में उसे समर्थ बनाती शिक्षा सोद्देश्य तथा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्णता प्रदान करती है लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन है। यह समायोजन व्यक्ति की व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार होता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति तथा पूर्ति करने वाली स्थितियों में सामंजस्य व संतुलन स्थापित करता है।

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक

समायोजन की समस्या मानवीय व्यवहार की एक जटिल समस्या है। किसी विशेष कारक को हम समायोजन समस्या का कारण नहीं कह सकते हैं। समायोजन की समस्या विकासमान व्यक्तितव के साथ अंतःक्रिया करने वाले अनेक कारकों का प्रतिफल है। घर, विद्यालय, समाज के अनेक कारक समायोजन को प्रभावित करते हैं। मुख्यतः ये कारक निम्नलिखित हैं–

1. घरेलू कारक

(1) भग्न गृह– सभी शोध अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि जो बच्चे भग्न गृहों से आते हैं उनके अंदर स्थायी गृहों की अपेक्षा अधिक समायोजन समस्या पाई जाती है। भग्न गृहों में बालकों की स्नेह, सुरक्षा, सहानुभूति आदि मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती।

(2) माता–पिता का व्यवहार– माता–पिता की अपने बच्चों से सम्बन्धित अभिवृत्ति का, बच्चों द्वारा अपने आपको समाज से समायोजन की क्षमता पर बहुत प्रभाव पड़ता है। माता–पिता का अत्यधिक सुरक्षात्मक तथा अत्यधिक अवहेलनात्मक व्यवहार बच्चों के समायोजन के लिए हानिकारक होता है।

(3) माता–पिता के बीच अनबन– जिन घरों में माता–पिता अक्सर लड़ते–झगड़ते रहते हैं वहां बच्चे असुरक्षित महसूस करते हैं जो कि उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

(4) परिवार की आर्थिक स्थिति– परिवार की आर्थिक स्थिति का बच्चे के व्यक्तित्व पर गहन प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक होगी तो बच्चों की आवश्यकताएं पूरी की जायेंगी जिससे उनका उचित समायोजन होगा। दूसरी ओर यदि परिवार की आर्थिक स्थितियां ठीक नहीं है तो बच्चों की आवश्यकताओं की भली–भांति पूरा नहीं किया जा सकेगा जिससे समायोजन समस्या उत्पन्न होगी।

2. विद्यालयी कारक

(1) अध्यापकों का अधिक प्रभुत्वपूर्ण अधिकार– अध्यापक जो विद्यार्थियों से व्यवहार करते समय अधिक प्रभुत्वपूर्ण तथा दमनकारी विधियों का प्रयोग करते हैं वे विद्यार्थियों के मन में भयपूर्ण मनोवृत्ति उत्पन्न कर देते हैं। इस कारण से मानसिक संघर्ष तथा जटिलताएं उत्पन्न होती हैं।

(2) अध्यापकों का पक्षपातपूर्ण रवैया– यदि अध्यापक कुछ विद्यार्थियों के साथ अनावश्यक अनुकूल व्यवहार करता है तथा अन्य विद्यार्थियों के साथ तर्कहीनतापूर्ण कड़ा तथा आलोचनात्मक व्यवहार करता है तो इससे विद्यार्थियों का मानसिक संतुलन बिगड़ता है तथा समायोजन की समस्या उत्पन्न होती है।

(3) विद्यालय में असफलता– असफलता और अपर्याप्तता का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इससे बच्चों में हीन–भावना उत्पन्न होती है तथा वह समायोजन की समस्या से ग्रस्त हो जाता है।

(4) विद्यालय में साधन–सुविधाओं का अभाव– हमारे विद्यालयों में सुविधाओं का बहुत अभाव है। यहां तक कि विद्यालयों के पास पर्याप्त मात्रा में श्रेणी कक्ष भी नहीं हैं तथा पुस्तकालयों का भी अभाव है। इस प्रकार का वातावरण शैक्षिक प्राप्तियों तथा विद्यार्थियों के सामान्य समायोजन के लिए सहायक नहीं हो सकता।

3. शारीरिक कारक

विद्यार्थी के सामाजिक विकास में उसके शरीर तथा उसके सामान्य प्रभाव का महत्त्व अत्यधिक है। यदि बालक शारीरिक रूप से कमजोर, भद्धा है तथा उसकी ज्ञानेन्द्रियों में भी कुछ दोष हैं तो वह दूसरों के द्वारा पसंद नहीं किया जाता। माता–पिता, शिक्षक तथा साथियों की टिप्पणियां ऐसे बालकों के व्यवहार तथा समायोजन को प्रभावित करती है।

4. सामाजिक कारक

सामाजिक कार्य, संघर्ष, जातीय द्वेष, ऊँच–नीच की भावना, असुरक्षा की भावना आदि विद्यार्थियों में मानसिक तनाव व समायोजन की समस्या उत्पन्न करते हैं।

5. साथी मित्रों का प्रभाव

विद्यार्थियों के समायोजन पर उनके साथी–मित्रों का भी प्रभाव पड़ता है। बुरे साथी–मित्रों की कुसंगति से बालकों में अनेक दोष आ जाते हैं।

6. संवेगात्मक कारक

वे बालक, जो मृत्यु, दुर्घटना, बाढ़ तथा दंगों के कारण संवेगात्मक धक्कों का अनुभव करते हैं, उनको समायोजन करने में कठिनाई होती है।

7. पर्यावरणीय कारक

उचित पर्यावरण ना मिलने के कारण भी समायोजन की समस्या उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए गलत सिनेमा के पर्यावरण से विद्यार्थियों में गलत आदतों का विकास हो जाना आदि।

समायोजन की समस्या को दूर करने के उपाय/समाधान

विद्यार्थी का व्यवहार जब नैतिक और सामाजिक स्वीकृति के अनुसार नहीं होता है तो वह समायोजन की समस्या से ग्रसित होता है। ऐसे व्यवहार समाज के लोगों की इच्छा के विरूद्ध होते हैं। इसका कारण यह है कि समायोजन की समस्या से ग्रस्त विद्यार्थी अपने मानसिक संघर्ष को दूर करने में असमर्थ रहते हैं। ऐसी दशा में समायोजन की समस्या को दूर करना जरूरी है। समायोजन की समस्या दूर करने के लिए हमें निम्नलिखित उपाय करने चाहिए–

(1) पर्यावरण के दोष दूर करना– बहुत सी स्थितियां ऐसी होती है जिनके कारण व्यक्ति पर्यावरण की उत्तेजना से कुसमायोजित व्यवहार कर बैठता है। उदाहरण के लिए सिनेमा के मादक पदार्थों सम्बन्धित दृश्य देखकर कई विद्यार्थी वैसा ही व्यवहार और आचरण करने का प्रयास करते हैं। पर्यावरण में सुधार करने से यह समस्या दूर हो सकती है।

(2) पलायनवादी अभिवृत्ति हटाना– पलायनवादी व्यक्ति वह होता है जिसमें लोगों से मिलने–जुलने, बातचीत करने, व्यवहार करने से लज्जा, भय, संकोच होता है। वह दिवास्वप्न अधिक देखता है, वह रहस्यवादी दृष्टिकोण अपनाता है। कभी–कभी कुछ असामाजिक आदतें आ जाती हैं। जैसे–बैठे–बैठे पैर हिलाना, दांतों से नाखून काटना, मुंह में या दांत तले उंगली रखना आदि। ऐसी अभिवृत्तियों को रोकने से समायोजन समस्या दूर होती है।

(3) असुरक्षा की भावना दूर करना– बच्चों को सुरक्षा की भावना, उन्हें माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों से प्राप्त होने वाले प्यार एवं स्नेह से मिलती है। यदि उनकी आवश्यकताओं की ओर भली भांति ध्यान दिया जाता है तो उनमें सुरक्षा की भावना का और भी संवर्द्धन होगा।

(4) बुरी संवेगात्मक स्थितियों को रोकना– प्रायः समायोजन की समस्या से ग्रस्त विद्यार्थी क्रोधी, झगड़ालू, चिड़चिड़े, आलसी, आक्रमणकारी हुआ करते हैं। यह उनकी संवेगात्मक स्थिति को बताता है। ऐसी स्थितियों को रोकने से उसका सुधार किया जा सकता है।

(5) माता–पिता के व्यवहार में संतुलन– माता–पिता का व्यवहार संतुलित होना चाहिये जिससे बच्चों में आत्म–विश्वास तथा स्व–निर्भरता विकसित हो। बच्चों को अपने माता–पिता के प्यार–पूर्ण–मार्ग–दर्शन के अधीन अपने को प्रकट करने तथा इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र महसूस करना चाहिए।

(6) विद्यार्थियों के समायोजन में अध्यापक के कार्य– विद्यालय में बालक के समायोजन में अध्यापक का कार्य बड़ा महत्त्वपूर्ण है। विद्यालय में शिक्षक को विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने, मानसिक समस्याओं को रोकने का प्रयास करना चाहिए।

(7) विद्यालयी पाठ्यक्रम में सुधार– विद्यालय में पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे बालक में व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का स्वस्थ विकास हो, आवश्यक ज्ञान बढ़े और मस्तिष्क पर अनावश्यक जोर न पड़े।

(8) मनोचिकित्सा एवं मनोविश्लेषण का प्रयोग– समायोजन की समस्या दूर करने में मनोचिकित्सा तथा मनोविश्लेषण का प्रयोग हितकर होता है इससे विद्यार्थी अपने दोषों का निदान समझकर उसे स्वयंमेव दूर करने का प्रयत्न करता है।

(9) निर्देशन एवं परामर्श देना– आधुनिक समय में समायोजन समस्या को दूर करने के लिए निर्देशन एवं परामर्श की क्रियाएं भी की जाती हैं। निर्देशन एवं परामर्श द्वारा विद्यार्थी को एक सुनिश्चित मार्ग मिल जाता है और मानसिक

संघर्ष भी दूर हो जाता है।

(10) खेल चिकित्सा– नवीन युग में वैज्ञानिक विधियों में खेल चिकित्सा भी है। इससे विद्यार्थी को क्रिया में लगाकर उत्तरदायित्व की भावना भी सिखायी जाती है और उसकी अवदमित इच्छाएं भी मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रकाशित होती है। फलस्वरूप समायोजन की समस्या दूर होती है।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1. अरोड़ा, रीता व मारवाह, सुदेश (2007); शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, जयपुर : शिक्षा प्रकाशन।
2. बेस्ट जे.डब्ल्यू.(1963); रिसर्च इन एजूकेशन न्यू दिल्ली, न्यू दिल्ली : प्रेन्टिंग हॉल ऑफ इण्डिया प्रा. लि.।
3. बोर्ग, डब्ल्यू.आर., (1963); एज्यूकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोडक्शन, न्यूयार्क : लोंगमेन्स ग्रीन एण्ड क.।
4. ब्राउन, एफ.जी. (1970); प्रिसिपल्स ऑफ साइकॉलोजीकल टेस्टिंग, इंक : डी डेन प्रेस।
5. बघेला, एच.एस. (2007); शिक्षा तथा भारतीय समाज, जयपुर : राजस्थान प्रकाशन।
6. भार्गव, महेश, (2005);आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा : एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
7. चौबे एस.पी., अखिलेश (2004–05),शैक्षिक मनोविज्ञान के मूलाधान, मेरठ : इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।
8. चौहान, एस.एस., (1978), एडवान्स एजूकेशनल साइकॉलोजी, देहली : विंकल पब्लिकेशन।
9. फेडरिक, एल. विहटनी, (1961); दि एलिमेंटस ऑफ रिसर्च, न्यूयार्क : एशिया पब्लिशिंग हाउस।
10. कुलश्रेष्ठ, एस.पी., (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ : आर.लाल बुक डिपो।
11. मिश्र, डॉ. करूणाशंकर, (2007); भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
12. माथुर, एस.एस., (2007), शिक्षा मनोविज्ञान, सत्ताइंसवा संस्करण, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
13. पाण्डेय, डॉ. रामशक्ल, (2006); शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ : आर.लाल बुक डिपो।
14. पाठक, पी.डी.(2008); शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
15. रूहेला, प्रो. एस.पी., (2006–07); विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
16. सिंह, अरूण कुमार, (2004);मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षण में शोध विधियां, दिल्ली : मोतीलाल, बनारसी पब्लिशर्स।
17. श्रीवास्तव, रामजी एवं अन्य, (2008);आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।